फातिमा (पुर्तगाल)
अगस्त १८, २००६

सन्देश संख्या १७२

अन्तर्जगत में मिथ्या विभाजन से मुक्ति

इन्द्रियों में शायद 'मैं–पना' का सबसे कम हस्तक्षेप घ्राणेन्द्रिय में होता है। यह सम्भव है कि आँखें देख रही हों किन्तु कुछ भी दिखाई न देता हो क्योंकि उस समय मन अन्य विचारों में व्यस्त हो सकता है । श्रवणेन्द्रिय के साथ भी ऐसा ही होता है । व्यक्ति को सुनने के लिए ध्यान देना पड़ता है जो कहा जा रहा है, उसे अन्य के प्रति अभीभूत मन सुन नहीं पाता, यद्यपि ध्वनियाँ कान तक पहुँचती है तथा कान के परदे को स्पन्दित भी करती हैं । लगता है, अपने सभी विभाजनों एवं विखण्डनों के बावजूद 'मैं–पना' घ्राणेन्द्रिय के साथ ज्यादा उपद्रव नहीं करता । इसीलिए हमलोग 'देखने–वाला' या 'सुनने–वाला' कह सकते हैं किन्तु 'सूँघने–वाला' नहीं कह कहते क्योंकि घ्राणेन्द्रिय में कर्त्ता–भाव कम तथा ग्राहक–भाव यानी कि ग्रहण करने का भाव अधिक होता है ।

शायद इसीलिए हाल के एक सत्संग के दौरान शिवेन्दु के शरीर से यह कहा गया था कि एक सुगन्धित फूल इस शरीर में खिला है और संयोजक, हवा की तरह, इस सुगन्ध को अपने–अपने क्षेत्र में ले जाते हैं ताकि इस सुगन्ध और ताजगी का बोध वहाँ के लोगों को भी हो और वे भी खिलने के लिए प्रेरित हो सकें ।

हवा का कोई कृत्य नहीं होता, वह कुछ करती नहीं, वह तो सुगंध की संवाहिका मात्र होती है । और जो लोग इस सुगन्ध को प्राप्त करते हैं उन्हें भी इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता । क्या सुनने के लिए भी अकर्त्ता–भाव की ऐसी स्थिति सम्भव है? अर्थात् बिना श्रोता हुए सुना जा सकता है क्या? ऐसा सुनना ही गुरू है क्योंकि इससे मन की आसक्ति समाप्त होती है, चित्त में मौलिक परिवर्तन हो जाता है और समझदारी की ऊर्जा का उदय होता है ।

किन्तु घ्राणेन्द्रिय भी अत्यधिक अनुबन्धन एवं पालन–पोषण की परिस्थितियों का शिकार बन सकती है, जैसा कि नीचे प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है :–

एक मालिन और एक मछुआरिन में गहरी मित्रता थी । एक दिन मालिन ने मधुआरिन को अपने घर रात्रि–विश्राम के लिए निमन्त्रित किया और उसे रातरानी जैसे सुगन्धित फूलों से भरी हुई एवं पुष्पवाटिका के बगल वाले कक्ष में ठहराया, ताकि उसकी सहेली रात भर फूलों की सुगन्ध का आनन्द ले सके। किन्तु मछुआरिन आधी रात तक करवट बदलते रही और अन्ततोगत्वा वह उठकर अपनी सहेली के पास जाकर बोली – ''मुझे नींद नहीं आ रही है। पुष्पवाटिका से आनेवाली गंध से मैं परेशान हूँ । ''सुनकर मालिन को बहुत आश्चर्य हुआ । जब उसने अपनी सहेली से बात करना चाहा तो देखा कि वह बाहर से अपनी मछली वाली टोकरी अन्दर लाकर उस पर पानी छिड़क रही है। उसने उस पर तब तक पानी का छिड़काव किया जब तक कमरा मछली के गन्ध से भर नहीं गया । इसके बाद मछुआरिन बिस्तर पर गई और अच्छी नींद में सो सकी ।

यह सम्भव है कि सांस्कृतिक निवेशों एवं अनुबन्धनों के कारण इन्द्रिय–प्रत्यक्षबोध वासना में परिवर्तित न हो और शुद्ध इन्द्रियबोध को उपलब्ध हुआ जा सके, हम अपने अन्तर्जगत के मिथ्या विभाजन से मुक्त होकर शाश्वत सुगंध की स्वतन्त्रता को उपलब्ध हो जायें ।

।। क्रिया सुगंध की जय ।।